Pratnakīrti, Volume 5, Issue 2, 2024 ISSN: 2322-0694

# राज्य-रक्षण का अपूर्व प्रकल्प 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' नाटक

महेशचन्द गुर्जर

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
नगलातुला, भरतपुरम्, राजस्थान
Phone +919610073599
maheshchanddr@gmail.com

**सारांश**

श्री वेङ्कटेश्वरशास्त्री द्वारा रचित 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' पाँच अङ्कों का एक अप्रकाशित नाटक है। इसे सन् 1851 ईस्वी में लिखा गया था। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि राजकीय संग्रहालय भरतपुर के स्टॉक रजिस्टर क्रमाङ्क 05 पर उपलब्ध है। पाण्डुलिपि की अन्य प्रति का अभाव है। इसके लेखक मूलतः दक्षिण भारत में रामेश्वरम् के निवासी थे। नाटक के नायक भरतपुर के जाट राजा बलवन्तसिंह है। इतिहास में इनका शासन काल 1825 से 1852 ई तक माना गया है। भरतपुर राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित यह राजनैतिक घटना प्रधान नाटक है, जो कि अपने राज्य की रक्षा का एक अपूर्व एवं सफल प्रयास कहा जा सकता है। इस नाटक को सम्भवतया अंग्रेजों को प्रभावित करने के लिए लिखवाया गया था। चूँकि तत्कालीन अंग्रेजों की यह नीति थी कि जिस राजा के औरस पुत्र नहीं होता था, ऐसे राज्य को 'खालसा' घोषित कर अपने राज्य में मिला लिया जाता था। बलवन्तसिंह के भी कोई सन्तान नहीं थी। अतः उन्होंने अपने प्रिय एवं आत्मीय परम हितैषी गुर्जर धाऊ गुलाब सिंह से मन्त्रणा कर उनके यहाँ जन्मे पुत्र को अपने पुत्र के रूप में प्रचार प्रसारित करवाया, ताकि अंग्रेज शासकों तक यह समाचार पहुँच सके कि बलवन्तसिंह के पुत्र पैदा हो गया है। पुत्रजन्ममहोत्सव के माध्यम से बलवन्तसिंह के पुत्रजन्म के अभीष्ट प्रचार प्रसारित कराने में नाटक पूर्ण सफल सिद्ध हुआ है। अन्ततोगत्वा बलवन्तसिंह के पुत्र रूप में जसवन्त सिंह के सिद्ध हो जाने से भरतपुर राज्य की राजलक्ष्मी अंग्रेजी शासन में विलय होने से सुरक्षित हुई व सुस्थिरता को प्राप्त हो गई थी।

रजवाड़ों एवं रियासतों का प्रदेश राजस्थान प्राचीन काल से ही त्याग, बलिदान, शौर्य, पराक्रम, उदारता, वीरता, राष्ट्रभक्ति और राष्ट्ररक्षण जैसे मूल्यों की दृष्टि से भारतीय इतिहास में उल्लेखनीय स्थान रखता है। वीर प्रसूता राजस्थान की इसी पावन धरा ने अनेक ईशभक्त एवं राष्ट्रभक्त वीर-वीराङ्गनाओं को उत्पन्न कर सम्पूर्ण मानवता के लिए स्पृह्य एवं अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया है। पन्नाधाय गुजरी का बलिदान देशभक्ति एवं स्वामीभक्ति का श्रेष्ठ निदर्शन है। मेवाड़ के एक सामन्त ने 1535 ईस्वी में महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदय सिंह की हत्या का भी प्रयास किया था। पन्नाधाय ने अपने पुत्र चन्दन को उदय सिंह की जगह लिटा कर बनवीर की तलवार का शिकार होने दिया और उदय सिंह को किले से बाहर भेज कर उसकी प्राण-रक्षा की।

Lalashankar Gayawal and Umesh Kumar Singh (Ed.) pp. 46-56
© Pratnakīrti Oriental Research Institute, Vārāṇasī, U.P., India
Recieved 28 July 2024, Revised 20 August 2024, Accepted 11 October 2024
This paper is available at https://www.pratnakirti.com/Home/Index

सन् 1851 ई० में श्री वेङ्कटेश्वर शास्त्री द्वारा रचित 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' नाटक भी अपनी रियासत को अपने ही लोगों के हाथों में सुरक्षित रखने का एक अभूतपूर्व एवं सफल प्रयास है। भरतपुर के जाट राजा बलवन्तसिंह के वस्तुतः कोई औरस पुत्र नहीं था। उन्होंने अपने वारिस के रूप में सन्तान गोद लेने का मानस बनाया लेकिन 'गोदनिषेध' नीति के तहत दत्तक पुत्र को गैर कानूनी घोषित कर अंग्रेजों द्वारा ऐसे राजाओं के राज्य हड़पने का भय भरतपुर नरेश के दिलों-दिमाग पर हावी था। चूँकि 1833 के चार्टर अधिनियम के द्वारा भारत के प्रशासन का केंद्रीकरण कर दिया गया। बंगाल के गवर्नर जनरल को पूरे भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया। अधीनस्थ प्रेसीडेंसियों के विधायी एवं वित्तीय अधिकार समाप्त कर दिए गए।[1] उक्त अनिष्ट को भाँप कर भरतपुर नरेश बलवन्तसिंह ने अपने विश्वासपात्र, स्वामिभक्त एवं अन्तःपुराधिकारी विख्यात धाऊ गुर्जर गुलाब सिंह के साथ गुप्त मन्त्रणा कर उनके पुत्र को अपने पुत्र के रूप में स्वीकार कर सम्पूर्ण रियासत में यह प्रचार प्रसारित करवा दिया गया कि राजा को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई है, अर्थात् राजा के घर पुत्र जन्म हुआ है।

तत्कालीन इतिहासकारों के अनुसार महाराजा बलवन्तसिंह का शासनकाल सन् 1825 से 1852 ई तक माना गया है।[2] इसमें विवरण मिलता है कि नृप बलवन्तसिंह के पुत्र जसवन्त सिंह का जन्म फाल्गुन वदी चौदस सम्वत् 1908 में हुआ था। इस अवसर पर राज्य में दिल खोलकर दान दिए गए, खुशियाँ मनाई गई। राज्य में कुल-ब्राह्मणों को प्रति आदमी ₹1 व एक सेर मिठाई दी गई। भाई बन्धु, रिश्तेदार एवं संपूर्ण प्रजा को दावत दी गई। कुल कैदियों को जेल से मुक्त किया गया।[3] राज्य में यह उत्सव लगभग एक माह तक निरन्तर मनाया गया। इसी दौरान रस और भाव से परिपूर्ण नवीन नाटक 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' को सम्भवतया अंग्रेजों को प्रभावित करने के लिए ही लिखवाया गया था। जिसका अभिनय प्राचीन लक्ष्मण मन्दिर, जो कि जाट राजाओं के गुरुद्वारे के रूप में प्रसिद्ध है, उस ऐतिहासिक स्थल पर किया गया।

औरसपुत्र नहीं होने के कारण अंग्रेजों की कुदृष्टि भरतपुर राज्य पर टिक गई थी, क्योंकि तत्कालीन आङ्ग्ल शासकों की यह नीति थी कि जिस राजा के कोई पुत्र नहीं होता था, उसके राज्य को 'खालसा' घोषित कर अंग्रेजी शासन में मिला लिया जाता था। यथा-हि, सन् 1850 ई. झाँसी का राज्य छीन लिया गया। इसी प्रकार नागपुर और तंजौर के राज्य भी अंग्रेजी शासन में मिला लिए गए। सन् 1857 ई का गदर इसी कारण हुआ था, क्योंकि महारानी लक्ष्मीबाई की कोई सन्तान नहीं थी। उन्होंने बालक गोद लिया, लेकिन अंग्रेजों ने लक्ष्मीबाई के औरस पुत्र न होने के कारण गोद ली हुई सन्तान को राजगद्दी देना स्वीकार नहीं किया और उस राज्य का प्रशासन सीधे अपने शासन में ले लिया था। परिणामस्वरूप 1857 ई. का विद्रोह भड़क गया।[4]

प्रकृत अप्रतिम नाटक की एकमात्र पाण्डुलिपि राजकीय संग्रहालय भरतपुर राजस्थान के स्टॉक रजिस्टर ग्रन्थ क्रमाङ्क 05 पर सुरक्षित है। नाटक की अन्य प्रति न तो किसी ग्रन्थालय

---

[1] आजादी के बाद का स्वर्णिम भारत, भाग-1, पृ.44

[2] ज्ञातवंश भरतपुर का इतिहास, ले. ठा. गङ्गीसिंह, पृ.132

[3] तत्रैव पृष्ठ 139

[4] शोधप्रबन्ध 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' नाटक का सम्पादन एवं समीक्षण, पृ.248

में उपलब्ध है और न ही किसी ग्रन्थ-सूची में अङ्कित है।[5] पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में भव्य महोत्सवीय घटना पर आधारित यह एक ऐतिहासिक-घटना-प्रधान नवीन नाटक है। इसका रचनाकाल पाण्डुलिपि की समाप्ति पर विक्रम सम्वत् 1908 तदनुसार 1851 ई अङ्कित है। 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' नाटक की प्रस्तावना में सूत्रधार ने इसके रचयिता श्री वेङ्कटेश्वर शास्त्री को मूलतः रामेश्वरम् (तमिलनाडु) निवासी तथा इनके पिता का नाम अनन्तनारायण शास्त्री बताया है। सूत्रधार के वक्तव्य से प्रमाणित है कि नाटक की प्रस्तावना का लेखक स्वयं सूत्रधार है, कवि नहीं। नाटक का अभिनय भरतपुर के ऐतिहासिक स्थल लक्ष्मण-मन्दिर के प्राङ्गण में परिषद् के आदेश से वसन्त-ऋतु के अवसर पर उनके प्रीत्यर्थ किया गया था। जैसा कि नाटक में सूत्रधार कहता है - आदिष्टोस्मि अये भरताचार्यपुत्र! केनापि नवेनानुरूपेण रसभावनिरन्तरेण रूपकेनास्मानानन्दयेति...[6]

## 1 नाटक-परिचय

श्री वेंकटेश्वर शास्त्री रचित बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव नाटक एक ऐसा ग्रंथ-रत्न है जो अभी तक विद्वानों की दृष्टि से ओझल रहा है। पाँच अङ्कों में विभक्त यह नाटक सरस एवं रमणीय है। इसका कथानक ऐतिहासिक है। इसके नायक भरतपुर के प्रसिद्ध सम्राट महाराजा बलवन्त सिंह इतिहास प्रसिद्ध जाटराजवंशोत्पन्न व्यक्ति हैं।जिनका शासन काल 1825 ई से 1852 ई माना जाता है। महाराजा बलवंतसिंह के पुत्रजन्म के अवसर पर एक महनीय भव्य उत्सव का समायोजन हुआ था। महाकवि ने इसी कथावस्तु को अपनी प्रतिभा से नाटक का रूप प्रदान किया है। यह नाटक कवि- प्रतिभा का चूड़ान्त निदर्शन है। नाटक में नाट्यशास्त्रीय नियमों का प्राय: समुचित निर्वाह किया गया है। इस नाटक का अभिनय वसन्तमहोत्सव के अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से समागत विदग्ध कलावन्तों, काव्यकारों न्याय- व्याकरण -आदि के प्रकाण्ड पण्डितों एवं रसिक चूड़ामणि सभासद-जनों के समक्ष उनके मनोरञ्जन मनस्तोष एवं प्रीत्यर्थ भरतपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल लक्ष्मण मन्दिर के प्राङ्गण में परिषद के आदेश से किया गया था, जो कि प्राचीन राजाओं का गुरुद्वारा भी था। यह नाटक कवि द्वारा प्रयोगार्थ सूत्रधार के लिए प्रदान किया गया था। 19वीं शती में लिखित यह नाटक आधुनिक संस्कृत नाट्य साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान रखता है।

## 2 पाण्डुलिपि-विवरण

वेंकटेश्वर शास्त्री द्वारा रचित एकमात्र नाटक 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' की एकमात्र पाण्डुलिपि 'राजकीय सङ्ग्रहालय' (भरतपुर, राजस्थान) में; यहां के स्टॉक-रजिस्टर, ग्रन्थ-क्रमांक 05 पर सुरक्षित है। ग्रन्थ की भाषा संस्कृत एवं लिपि देवनागरी है। काली स्याही से पृष्ठ के दोनों ओर लिखित है। प्रति की लम्बाई-चौड़ाई का माप $26 \times 11$ सेमी है, जिसके दाएँ - बाएँ दोनों ओर दो-दो सेण्टीमीटर हाशिया छोड़ा गया है तथा ऊपर- नीचे 1.5 -1.5 सेण्टीमीटर स्थान रिक्त है। पत्र के आगे पीछे के भाग को मिलाकर एक पत्र संख्या मानी गई

[5] Catalogus Catalogorum एवं New Catalogus Catalogorum

[6] शोधप्रबन्ध 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव'... प्रथम-अङ्क, प्रस्तावना, पृष्ठ 35, 36

है। इसमें कुल पत्र-संख्या 37 अङ्कित है। लेखक की भूल से पत्र संख्या 17 दो बार अङ्कित है इस प्रकार कुल पत्र संख्या 38 है। पत्र की प्रत्येक पङ्क्ति में शब्दों की संख्या लगभग 45 हैं। प्रति में मिलित शब्दावली का प्रयोग किया गया है। पद्य एवं गद्य मिलाकर निरन्तरता में लिखे जाने के कारण किसी पद्य की पङ्क्ति पूर्ण हो जाने पर भी आगे की पङ्क्ति के प्रथम शब्द के साथ उसे मिला हुआ मानकर सन्धि के नियमानुसार उसमें विसर्गलोप अथवा अन्य परिवर्तन कर दिए गए हैं। प्रति में पूर्ण विराम, अल्पविराम आदि का अभाव देखने को मिलता है। अवग्रह चिन्ह (ऽ)का प्रयोग नहीं मिलता पतित पाठ अथवा किसी संशोधन को दर्शाने के लिए हंसपग या मोरपग का चिन्ह लगाकर छूटा हुआ अंश उसी पङ्क्ति के सामने हाशिये में अथवा सबसे ऊपर या नीचे के रिक्त स्थान (हाशिये) में लिख दिया गया है। अतिरिक्त शब्द लिखे जाने पर हरताल (पीले रङ्ग) से लेप कर दिया गया है। प्रति में वर्ण परिवर्तन या बराबर लाइन पूरा करने के लिए विभिन्न सङ्केतों का प्रयोग किया गया है।

पाण्डुलिपि की लिखावट सुपाठ्य एवं स्पष्ट होते हुए भी भ्रम अवश्य उत्पन्न करती है। जैसे य में प की, व में ब की, कमें फ की, थ में य की, न में त की, श में प्र की, क्ष में ल की, स्व में रच की, त्य में त्थ की, भ्रान्ति के रूप में अनेक शब्दों में एक दूसरे का भ्रम पैदा होता है। सम्पादित नाटक में मोटे अक्षर एवं रेखाङ्कित शब्द कीटभक्षित होने पर नाटक प्रसङ्गानुसार लिखा गया है। रिक्त स्थान कीटभक्षित अनुपलब्ध स्थान को सूचित करता है।

पाण्डुलिपि का शुभारम्भ "श्री गणेशाय नमः" से करते हुए प्रारम्भ के तीन श्लोकों में मंगलाचरण का विधान है।

प्रस्तुत नाटक पाँच अङ्क में निबद्ध है। इसके प्रत्येक अङ्क के अन्त में अङ्क -समाप्ति सङ्केतित है, यथा-

प्रथम-अङ्क : "इति श्री महाराजाधिराजब्रजेन्द्रबलवंतसिंहपुत्रजन्ममहोदयस्य नाम नाटके प्रथमोंकः"

## 3 कथावस्तु समीक्षा

नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' नाटक की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध होने के कारण 'प्रख्यात' है। इसमें कुल पाँच अङ्क हैं। इसका शुभारम्भ मङ्गलाचरण के तीन पद्यों से हुआ है। आशीर्वादात्मिका नान्दी में सर्वप्रथम भगवान् विष्णु की स्तुति निरूपित है जिसमें शृङ्गार की धारा पर्याप्त गम्भीर अपूर्व है। स्रग्धरा छन्द में नाटक का प्रथम सुललित श्लोक इस प्रकार है –

लक्ष्मीवक्षोजपाथोजनियुगललसत्पत्रवल्लीसमाज-
प्राश्लेषोद्भूतचित्रप्रचयपरिवृतोरस्थलोदञ्चितश्रीः।
नित्यं वैकुण्ठ नामा दिशतु शुभशतं खङ्गचक्राब्जशार्ङ्ग-
प्रत्यासन्नैः सुदीर्घैर्नवघनसदृशो दोःप्रकाण्डैश्चतुर्भिः॥[7]

नाटक के नायक बलवन्तसिंह द्वारा स्वपुत्र मुखावलोकन व पुत्रजन्म के प्रचार-प्रसार से भरतपुर की राज्यलक्ष्मी की सुस्थिरता सुनिश्चित होना एवं तज्जन्य आनन्दानुभूति ही प्रस्तुत

[7]बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सवः 1.1

नाटक का महान फल है। यतो हि 'पुन्नाम नरकात्त्रयते इति पुत्रः' अर्थात् पुत्र वंश का विस्तारक एवं पितरों को तर्पण देने वाला होता है, साथ ही पुम्नामक नरक से पितरों की रक्षा करता है, इसलिए पुत्र की महत्ता लोक में निर्विवादित है –

सरोजिनीनायकमेकमन्तरा,
यथा जगत्स्थावरजङ्गमात्मकम्।
तथा गृही सन्ततिमन्तरा ध्रुवं,
तिरस्कृतिं याति परां तमोगणैः॥ (तत्रैव,२/४०)

इस नाटक में नाट्यशास्त्रीय नियमानुसार अर्थप्रकृति, पञ्चावस्था एवं पञ्चसन्धियों का यथास्थान समुचित निर्वहण किया गया है।

## 4 विष्कम्भक-प्रयोग

प्रस्तुत नाटक के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम अङ्कों के प्रारम्भ में प्रयुक्त शुद्ध विष्कम्भक दृश्य सामग्री से युक्त होने के कारण लघु दृश्य के रूप में प्रयुक्त हैं। 'अर्थोपक्षेपक को सूच्य होना चाहिए' – पुराने पड़े इस भारतीय विधान को कवि वेङ्कटेश्वर शास्त्री ने अमान्य किया है। नाटककार ने लम्बायमान इन विष्कम्भकों में लम्बे गद्यांश के अतिरिक्त सरस काव्य के अनुरूप अनेक पद्य भी सन्निवेशित किए हैं। प्रायः इन विष्कम्भकों द्वारा इतिवृत्त की घटनाओं को गूँथा गया है। प्रतीत होता है कि नाटककार का उद्देश्य अधिक से अधिक प्रेक्षक और पाठकों को बलवन्तसिंह के पुत्र जन्मोत्सव के विषय में परिचय कराना है। वास्तव में अर्थोपक्षेपक ऐसी वस्तु की सूचना मात्रा के लिए होते हैं, जिसका प्रदर्शन रङ्गमञ्च पर अवाञ्छनीय हो। तदनुसार नाटक में उक्त विधान की पूर्ण पालना नहीं हुई है।

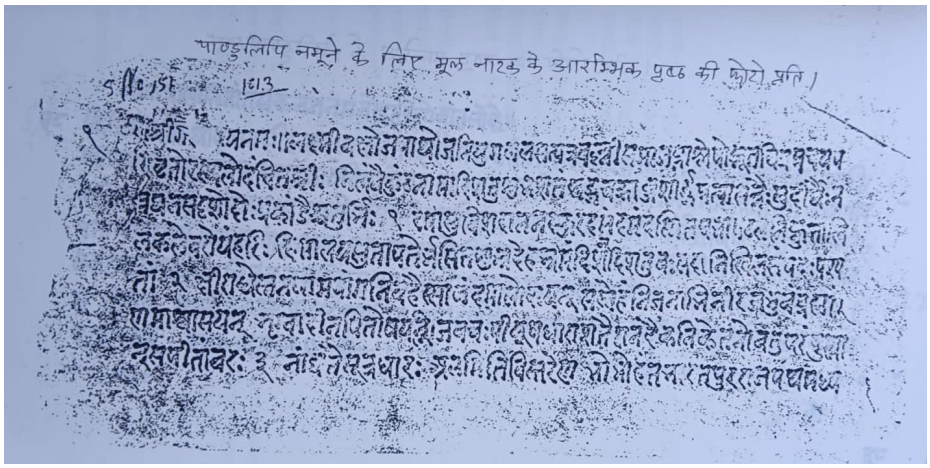


चित्र 1: प्रस्तुत पाण्डुलिपि का प्रथम पत्र

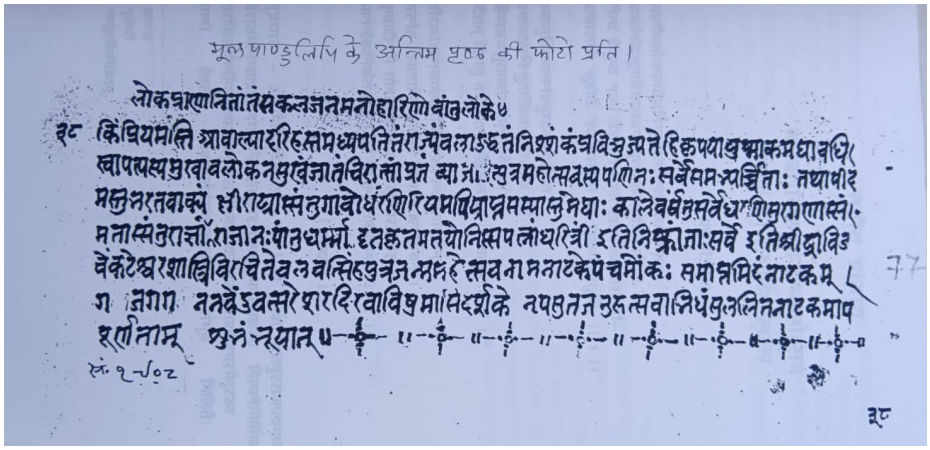


चित्र 2: प्रस्तुत पाण्डुलिपि का अन्तिम पत्र

## 5 संवाद-विवेचना

प्रकृत नाटकीय संवाद अधिकांशतः छोटे-छोटे और सहज बोधगम्य हैं। कहीं-कहीं इसके गद्योचित संवाद छन्दोमण्डित हैं। (तत्रैव,१/५, ३/५, ३/१८ इत्यादि)। अर्थात् नाटकीय इतिवृत्त के आख्यान में जहाँ गद्योचित सरणि होनी चाहिए थी, वहाँ भी पद्य का माध्यम अपनाया गया है। अनेकत्र संवादों में बनावटीपन, अनावश्यक विस्तार एवं लम्बे-लम्बे समस्त पदों से कवि का पाण्डित्य प्रदर्शित अवश्य हुआ है, किन्तु कृति की अभिनयार्हता बाधित भी हुई है। विशेष रूप से कवि ने अपने आश्रयदाता; नाटक के नायक बलवन्तसिंह को महिमा-मण्डित करने के लिए संवादों को लम्बा करने की रीति अपनाई है।

## 6 वर्णन-वैविध्य

नाटक के प्रेक्षक केवल कथावस्तु के प्रपञ्च में ही अभिरुचि नहीं लेते अतः नाट्यकार ने स्थान-स्थान पर देश और काल का प्रसङ्ग आने पर प्रकृति और नगर की ऐश्वर्यशालिनी एवं सुमनोहरा विभूतियों की चारुता का निबन्ध करते हुए प्रस्तुत नाटक में अनेक वर्णनों का समावेश किया है। वसन्त की मादकता का वर्णन देखिए–

क्वचिद्भृङ्गाः गुञ्जारवमखिलसञ्जातसुरसम्,
प्रगायन्ति स्वैरं क्वचिदपि पिकाः कोमलगिरः।
ब्रुवन्ति प्रत्यायां मलयपवनः सर्वसुमनः,
सुगन्धानत्यन्तं प्रकिरति वसन्तेऽत्र सुभगे॥ (तत्रैव,१/४)

ब्रजेश बलवन्तसिंह के अन्तःपुरस्थ रूपवती स्त्रियों के मनोरम विलास का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है –

गलद्वेणीबन्धाः प्रचलकुचकुम्भाहितभराः,
हसन्त्यो गायन्त्यः प्रभुतनयजन्मोत्सवकृते।
समायान्त्यः स्वैरं पुरनिलयरामाः हि गणशः
ब्रजक्षोणीशान्तःपुरमुदधिभङ्गाः इव मुहुः॥ (तत्रैव, ३/३२)

इसी प्रकार रात्रि, राजवीथी पर हाथी-घोड़ों की सवारी, रथों के सञ्चालन एवं उनकी मधुर ध्वनि, वारविलासिनियों के रूप-लावण्य, भरतपुर का ऐश्वर्य आदि वर्णन विशेष उल्लेखनीय हैं। विविध रमणीयतम वस्तुओं और चमत्कारिक वर्णनों से कवि ने नाटक को समृद्ध बनाया है।

## 7 एकोक्ति

नाटक में कहीं-कहीं पात्र अकेले ही रङ्गमञ्च पर अपने चिन्तन में उधेड़बुन करता हुआ उपस्थित होता है। इससे कवि की एकोक्ति-निष्ठा परिलक्षित होती है, यथा – नाटक के द्वितीय अङ्क में आर्यमिश्र दुर्गाप्रसाद एकाकी रङ्गमञ्च पर कलियुग को उलाहना देता है – अहो कलियुगस्य दुरात्मनो माहात्म्यम्... यतः –

चन्द्रोदयादिषु रसेषु मया न दृष्टम्,
वीर्यं न किञ्चिदपि मूलदलादिकेषु।
मन्त्रेषु तन्त्रकरणेषु शिवादिदेवे-,
ष्वत्याहितं निखिलमेव कलौ बभूव॥ (तत्रैव,२/१)

## 8 भङ्ग्यन्तरकथन

कहीं-कहीं इस नाटक में पात्र द्वारा गद्य में किसी बात का कथन करने के उपरान्त उसी बात को प्रकारान्तर से पद्य में कहा गया है, यथा–

रघुनाथः– (आकाशे कर्णं दत्वा) अहो! पुत्रजन्मप्रहर्षितबलवन्तसिंहदेवपादाज्ञा-प्रचलिताग्नेययन्त्रमुखविनिर्गतावच्छिन्ननिर्घोषसंघातवादित्रैः सहाभितोभिहतनिखिलदुन्दुभिध्वनयश्च–

भेर्य्यादिभूधरगुहासु विदीर्णयन्तः,
सर्वामपि क्षितिमिमां प्रविघूर्णयन्तः,
ब्रह्माण्डगोलकमपि प्रविभिद्य गन्तु –
मूर्ध्वोर्ध्वगा इव मुहुर्मुहुरुच्चरन्ति॥ तत्रैव 3.3

## 9 गर्भाङ्क-विधान

प्रस्तुत नाटक के चतुर्थ अङ्क में एक 'अन्तर्नाट्य' का निर्देश है। इसका नियोजन नाट्यशिल्प में अपूर्व है। नाट्यमण्डली के लिए रङ्गशाला निर्माण तथा शृङ्गार रस के उद्दीपन विभाव

के रूप में विभिन्न राज्यों से समागत नृत्याङ्गनाओं एवं प्रसिद्ध गणिकाओं का सौन्दर्य परिचय दिखाकर सम्भवत: प्रेक्षकों का श्रृङ्गारित मनोरञ्जन अविकल करना कवि का उद्देश्य है। आर्गलनगर अर्थात् आगरा से नृत्य प्रदर्शनार्थ उपस्थित हुई मदनमञ्जरी नामक नगरवधू का परिचय गणिकाध्यक्ष द्वारा इस प्रकार दिया गया है –

आकर्णान्तविलोचना कुचभरेणाच्छिन्नवक्षस्स्थला,
श्रोणीभारविखिन्नसक्थियुगला लास्याब्धिपारङ्गता।
वीणानादसामानकंठनिनदा श्रृङ्गारवारांनिधिर्,
विद्युद्वीरुदिव त्विषा विलसति स्थानीयसीमन्तिनी॥ तत्रैव 4.4

इसके अन्तर्नाट्य में पुत्रमहोत्सव का रूपकायित होना एक विरल संविधान है। यहाँ मनोरञ्जन की अतिशयता के लिए नृत्य, सङ्गीत आदि का विधान विशेष सफल माना जा सकता है।

## 10 नेता (नायक)

भारतीय विधान के अनुसार विनय आदि सामान्य गुणों से विभूषित नृप बलवन्तसिंह प्रस्तुत नाटक में धीरोदात्त प्रकृति के नायक हैं। पुनरपि उनमें धीर-ललित नायक के भी लक्षण देखे जा सकते हैं। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से वे एक आदर्श राजा, वात्सल्य से परिपूर्ण सौभाग्यशाली पिता तथा अनेकविध सम्पत्तियों से विभूषित आदर्श मित्र के रूप में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं।

नाटक में राजा के निम्न कथन से उनकी उच्च कुलीनता एवं यश:प्रशस्ति अभिव्यञ्जित हुई है –

अस्मद्गोत्रपुराणभूमिपतिभिर्निर्जित्य पृथ्वीमिमां,
कीर्तिं स्वर्गनदीपयोभिरभित: सर्वा दिश: क्षालिता:।
हेतुर्युष्मदनारतार्जिततप:संघात एवात्र तु,
स्वर्गाधीशकृता सुरेन्द्रविजये विद्येव वाचाम्पते:॥ तत्रैव 1.27

इस प्रकार वे इतिहास प्रसिद्ध क्षत्रिय कुलोत्पन्न एवं याचकों को प्रभूत दान देने के कारण 'दानवीर नायक' के रूप में प्रसिद्ध हैं। नाटक में नायिका का अभाव है, साथ ही प्रतिनायक, प्रतिनायिका एवं विदूषक का भी अभाव है।

## 11 रस-निरूपण

'एक एव भवेदङ्गी श्रृङ्गारो वीर एव वा' – इस भारतीय नाट्यविधान के अनुरूप प्रस्तुत नाटक का 'प्रधान रस वीर' है। वीर रस के दान, दया, धर्म और युद्ध इन चार प्रकारों में से 'दानवीर' का उज्ज्वल रूप नाटक में प्रतिफलित हुआ है। नृप बलवन्तसिंह ने स्वपुत्र-जन्म की खुशी में ब्राह्मणादिकों को प्रभूत धन-धान्यादि के दान से अपनी कीर्ति का विस्तार किया है। नाटक में राजा की दानवीरता के विषय में एकत्र कहा भी गया है –

देवैः स्वर्णमहीधरो विहरणस्थानार्थमङ्गीकृतः,
कल्पद्रुस्सुरभिसुरेशवसतौ चिन्तामणिश्चाभवन्।
एतन्मतसविधे भवेद्यदि पुनः सर्वं द्विजेभ्यो मया,
दातुं शक्यमिति बृजेशबलवन्तसिंहस्य वाञ्छा हृदि॥ तत्रैव 1.25

अङ्ग रूप में इस नाटक में वात्सल्य, शृङ्गार, अद्भुत, हास्य प्रभृति रसों की भी सुन्दर अभिव्यञ्जना हुई है। स्वपुत्र-मुखावलोकन के अवसर पर राजा के हृदय में मानो वात्सल्य का सागर उमड़ रहा है, जिसका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है –

आकर्णान्तविलोचन सुललितं चञ्चत्कृषशं ह्यम्बुजम्,
बालं पार्वणचन्द्रसन्निभमुखं दृष्ट्वा रुदन्तं मुहुः,
मर्यादां निजां हि निजात्मनि परानन्दाम्बुधिर्भूपतेः,
श्रीमद्गोष्ठधराधरस्य परितश्चन्द्रं यथा सागरः॥ तत्रैव 2.32

नाटक में शृङ्गार की अजस्र धारा का आलम्बन विभाव नाट्यप्रदर्शनार्थ विविध प्रान्तों से समागत नृत्यांगनाओं को बनाया गया है।

## 12 छन्दोविधान

नाटककार ने छोटे-बड़े सभी प्रकार के छन्दों से अपने नाटक को सजाने का प्रयास किया है। इसमें कुल 21 प्रकार के छन्द प्रयुक्त हैं। कवि का प्रियतम छन्द 'शार्दूलविक्रीडितम्' है, जिसका सर्वाधिक 64 बार प्रयोग हुआ है। इससे नाटककार की तद्विषयक निपुणता परिलक्षित होती है। वहीं अनुष्टुप् छन्द – 27 बार एवं वसन्ततिलका – 17 बार प्रयुक्त है। नाटक का आरम्भिक एवं अन्तिम पद्य 'स्रग्धरा' वृत्त में उपनिबद्ध है।

## 13 अलङ्कार-विन्यास

श्री वेङ्कटेश्वर शास्त्री ने अलंकारों का सहज एवं स्वाभाविक विन्यास किया है। समीक्ष्य नाटक में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति, श्लेष आदि अलङ्कारों का औचित्यपूर्ण प्रयोग अतिशय दृष्टव्य एवं प्रशंसनीय है। आनुप्रासिक छटा तो पद्य के साथ-साथ गद्य में भी सुशोभित हुई है। कहीं-कहीं छोटे-छोटे गेय छन्दों में अनुप्रास विलास का रञ्जनीय विधान सुन्दर बन पड़ा है। यथाहि –

उपश्रुतिर्मङ्गललिङ्गवादिनीं,
प्रवक्ति राज्ञस्सुतजन्मकौतुकम्।
पुरस्त्यवातलिरिवामराधिपम्,
प्रसक्तकोदण्डमनोज्ञवारिदम्॥ तत्रैव 1.14

उपमानों को कवि ने प्रकृति की सुन्दरतम वस्तुओं से चुनकर प्रस्तुत किया है। एक जगह उत्प्रेक्षा की नवीन उद्भावना करता हुआ कवि लिखता है–

एता पश्य पुरीनतभ्रुव इमाश्चन्द्रोदयमेकः पुनः,
भ्रूभागे प्रतिमास्मादास्यसमतामासाद्य लक्ष्मा तनोत्।
इत्येवं कुपिता इवाज्वमधुना हस्तैर्ग्रहीतुं मुहुः,
कूर्दन्त्यूर्ध्वमहो प्रताण्डवमिषाद् दोष्णां समुत्क्षेपणम्॥ तत्रैव 5.26

## 14 सूक्तिप्रयोग

बहु-क्षेत्रीय विविध सूक्तियों के द्वारा कवि की गहरी लोकानुभूति की प्रतीति होती है। विभिन्न उपादानों से गृहीत इन सूक्तियों के प्रयोग के क्रम में 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कार का रमणीय प्रयोग हुआ है। नाटक की कुछ सूक्तियाँ यहाँ उल्लेखनीय हैं–

1. दयालवः साधुजनाः हि लोके बिना निमित्तं सुतरां भवन्ति। तत्रैव, 1.17)
2. स्त्रियः खलु स्वभावतः एव कातराः। (तत्रैव,2.26)
3. तेजोनिधावुदयमञ्चति नैश एव गाढान्धकारनिवहः समुपैति नाशम्। (तत्रैव,2.37)
4. पिता सुपुत्रेण हि पैतृकादृणाद्विमुच्यते। (तत्रैव, 2.40)
5. उत्तमेषूत्तमा एव ह्यनुरक्ताः भवन्ति। (तत्रैव, 5.16)

## 15 नाटकीय माहात्म्य

'काव्येषु नाटकं रम्यम्' के अनुरूप काव्य की समस्त विधाओं में नाटक की रम्यता निर्विवाद है। 'बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सव' का सांस्कृतिक, राजनैतिक और शिष्टाचारिक तत्त्वानुदर्शन सातिशय उदात्त है। इसमें कहीं-कहीं चरित्र-निर्माण की दिशा में धर्मशास्त्रीय विधानों का उपयोग हुआ है। समसामयिक, राजनैतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह नाटक विशेष सफल कहा जा सकता है। आधुनिक संस्कृत-नाट्य साहित्य की परम्परा में अपूर्व स्थान बना सकने वाली इस कृति को प्रकाश में लाने की महती आवश्यकता है जो कि निश्चय ही संस्कृत-नाट्य-साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना अपूर्व योगदान देगी।

## सन्दर्भसूची

1. बलवन्तसिंहपुत्रजन्ममहोत्सवः (1851). हस्तलिखित ग्रन्थ, राजकीय संग्रहालय, भरतपुर (पाण्डुलिपि क्रमांक-05), कुल पत्र संख्या 38.
2. बलवन्तसिंह महाराज के पुत्र जन्म की छन्दोबद्ध चिट्ठी (19वीं शताब्दी). अज्ञात. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, भरतपुर (पाण्डुलिपि क्रमांक-4140).
3. नखशिख वर्णन राजाबलवन्तसिंह हिन्दी रामकवि (19वीं शताब्दी). राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, भरतपुर (पाण्डुलिपि क्रमांक-205).
4. राजाबलवन्तसिंह की प्रशंसा ब्रजभाषा रामकवि (19वीं शताब्दी). राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, भरतपुर (पाण्डुलिपि क्रमांक-57).
5. रामजी उपाध्याय (1990). *आधुनिक संस्कृत नाटक* भाग 2 एवं 3. संस्कृत परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.).

6. Aufrecht, Theodor. 1878. *Catalogus Catalogorum: A Dictionary of Sanskrit Authors and Their Works*. Leipzig: Breitkopf & Härtel.
7. मद्रास विश्वविद्यालय (1991). *New Catalogus Catalogorum* Volume-13. मद्रास.
8. रामवीर सिंह वर्मा (1991). *जाटों का गौरवशाली इतिहास*. मनु प्रकाशन, भरतपुर.
9. ठाकुर गंगी सिंह (1768-1948) (1991). *भरतपुर का इतिहास*. किदबई पार्क राजा मण्डी, आगरा.
10. कुंवर नटवर सिंह (1985). *महाराजा सूरजमल*. राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली.
11. बलदेव उपाध्याय (2000). *संस्कृत वांगमय का वृहद् इतिहास* - सप्तम खण्ड. उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ.